सुमन भट्ट
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
सहायक अध्यापिका
बटुला, कनालीछीना, पिथौरागढ़

आश्वस्त करते हैं शिक्षकों के प्रयास

प्रधानाध्यापिका	–	कलावती चौहान
सी.आर.सी.सी.	–	देवेन्द्र कोहली
भोजन माता	–	पार्वती देवी
नामांकन	–	1 2

शिक्षा की लगभग नाउम्मीद सी दिखती फिजां में जब शिक्षकों की ऊर्जा, बच्चों के लिए उनके चिंतन और कर्म के सरोकार देखने में आती है तो हमारी उम्मीदें एक आश्वस्ति से भर जाती हैं। ऐसी ही एक शिक्षिका हैं सुमन भट्ट जिनके प्रयास ने विपरीत परिस्थितियों में भी उम्मीदों का दामन थामे रखा है। जिला मुख्यालय पिथौरागढ़ से लगभग 30 किमी दूर कनालीछीना ब्लाक के स्कूल बाटुला में कई बार स्कूल जाना हुआ। इस स्कूल की एक शिक्षिका सुमन भट्ट से भाषा कार्यशाला में मुलाकात होती रही है। वे स्वैच्छिक शिक्षक मंच की बैठकों में भी सक्रिय भागीदारी करती रहती हैं तब उनके काम को और अधिक गहराई से समझने का अवसर मिला। इसके लिए हमने निश्चय किया कि पुनः उनके स्कूल जाया जाए। स्कूल पहुंचने के लिए मुख्य सड़क से 17–18 किमी. चलने के बाद लगभग 12 किमी कच्ची सडक से होकर विद्यालय तक पहुंचा जा सकता है। इस स्कूल में दो शिक्षक हैं श्रीमती सुमन भट्ट, वह भाषा की शिक्षिका हैं और दूसरी हैं श्रीमती कलावती चौहान जो गणित और विज्ञान की शिक्षिका हैं। स्कूल में कुल 12 शिक्षार्थी पढ़ते हैं। इस स्कूल की दशा और दिशा देखकर मन में बार–बार यह सवाल उठते हैं कि इन कठिन परिस्थितियों में भी कोई शिक्षक कैसे बेहतर काम कर सकते हैं।

इस विद्यालय का सेवित इलाका काफी विस्तृत है, जिस जगह स्कूल है वहां से लगभग 1 किमी तक कोई आबादी नहीं है। स्कूल सड़क के समीप ही है किन्तु आसानी से नजर नहीं आता। स्कूल के नजदीक पंहुचा तो मैडम सड़क के समीप ही खड़ी थी। उन्होंने ने बताया कि उस निर्जन इलाके में स्कूटर की आवाज सुनकर हमारे पहुंचने का अनुमान लगाकर हम कहीं आगे ना निकल जायें इस आशंका से वे हमें लिवाने आ गयी थी। स्कूल पहुंचने पर देखा तो बच्चे पेड़ के नीचे अपनी कक्षा में पढ़ रहे थे। आसपास नजर दौड़ाई तो स्कूल के पुराने, जर्जर भवन पर नजर पड़ी, सुमन मैडम ने बताया की 2013 से इस भवन का इस्तेमाल नहीं हुआ है। भवन पुरानी पहाड़ी शैली का बना है। छत के कमजोर पड़ने के कारण पत्थर गिरने का भय हमेशा बना रहता है। अतः वे इसका उपयोग नहीं करते हैं।

सुमन मैडम ने बच्चों से परिचय करने के बाद विद्यालय की दूसरी शिक्षिका कलावती मैडम से परिचय कराया। बातचीत में पता चला कि कलावती मैडम 1998 से इस विद्यालय में हैं। मैडम बताती हैं– इस सड़क को बने हुए 5 साल ही हुए हैं और इस से पहले वो रोज 15 से 20 किमी पैदल चल कर स्कूल पहुंचती थी। सड़क बनने के बाद भी काफी समय यात्रा में निकल जाता है फिर भी दोनों शिक्षिकाएं यथासंभव रोज समय पर स्कूल पहुंचने की कोशिश करती हैं। क्योंकि बच्चे 2 से 4 किमी तक चलकर स्कूल पहुंचते हैं और वे उन्हें निराश नहीं करना चाहती हैं।

स्कूल का भवन ना होने के कारण कक्षाओं को पेड के नीचे संचालित करना

पड़ता है। स्कूल घाटी के इलाके में है तो यहां काफी गर्मी पड़ती है। सूर्य की किरणों के साथ–साथ कक्षा भी पेड़ की छाया की तरफ घूमती रहती है। हर एक–दो घंटे में मेज और कुर्सियों को हटाकर छाया में लगाना पड़ता है। कभी बरसात हो गयी तो तुरंत कक्षा को रसोई में लगाना पड़ता है। भले ही ये पेड़ ही उनका स्कूल है फिर भी पढाई में कभी कोई समझौता नहीं किया गया।

दोनों शिक्षिकाओं की मेहनत और कार्य के प्रति निष्ठा बच्चों में दिखती है। बच्चों से बातचीत करने में उनका आत्मविश्वास साफ झलकता है। बच्चों की अभिव्यक्ति में झलकती दृढ़ता और रचनाओं में दिखती मौलिकता शिक्षकों की समझ और काम का जीता जागता परिणाम है। इसी बीच बच्चों ने कहानी सुनाने को कहा तो हम ने मिलकर एक कहानी बनाने और एक दूसरे से साझा करने की बात रखी। कुछ शब्दों को ब्लैकबोर्ड पर लिख दिया जैसे – मेला , खिलौने, कपड़े, दुकान, जलेबी, बाजा आदि। बच्चों ने अलग–अलग कई कहानियां बनाई और सुनाई। सुमन मैडम बताती हैं कि वो बच्चों को लगातार पढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं। इस के लिये उन्होंने एक छोटी से लाइब्रेरी किचन में ही बनाई है। विभाग से मिली किताबों के साथ–साथ कुछ मासिक पत्रिकाएं, जैसे– बाल हंस, चंपक और नंदन आदि की व्यवस्था वे खुद ही करती हैं।

बच्चों को हर सप्ताह एक किताब दी जाती है और पढ़ने के बाद प्रत्येक बच्चे को उस कहानी या किताब का सार सभी के साथ बारी–बारी से प्रार्थना–सभा में साझा करना होता है। बच्चों के अन्दर पढ़ने की रुचि पैदा करने में इस प्रकार के कदम काफी उपयोगी होते हैं।

सुमन मैडम भाषा की कार्यशाला में भी प्रतिभाग करती रहती हैं। कार्यशाला

में बनी समझ और उसका बच्चों के साथ क्या कुछ उपयोग हो पा रहा, इस पर जब बातचीत आगे बड़ी तो मैडम ने बताया कि कोड मिक्सिंग से कहानी पढाने और बच्चों को सन्दर्भ से शब्द और अर्थ समझाने में सहायता हो रही है। कविता और निर्देशों का उपयोग भी सहायक है। मैडम की कही बात को उनका काम बल दे रहा था। नोटिस बोर्ड पर लगी सामग्री से सीखने की अवधारणायें जुड़ती दिख रही थी।

शिक्षकों के काम और विषम स्थितियों के बावजूद बच्चों की शिक्षा के लिए लगन होना हमारे अन्दर भी ऊर्जा भरता है कि हम उनके लिए कुछ और अधिक कर सकें। सुमन मैडम से अपने कार्य अनुभवों को लिखने और अन्य शिक्षक साथियों तक शिक्षकों की पत्रिका–प्रवाह के माध्यम से साझा करने का अनुरोध किया जो उन्होंने सहर्ष मान लिया। अंत में बच्चों के साथ कुछ कहानी, कविता और खेल की गतिविधि संचालित करने का मौका मिला और बच्चों ने भी रुचिपूर्वक प्रतिभाग किया।

शिक्षकों से जो हमारी बातचीत हुई उसके कुछ महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार हैं।

- इतनी विपरीत परिस्थितियों में वे कैसे काम कर पाती हैं? इस पर कलावती मैडम जो 1998 से उस स्कूल में है, बातचीत के दौरान बताती हैं कि, कई बार उनके सामने इस स्कूल से सुगम जगह जाने के मौके आये लेकिन उन्होंने यहीं पर रह कर काम करने का निर्णय लिया। मैडम बताती हैं कि जिस पेड़ के नीचे आज स्कूल चल रहा है वो उनके द्वारा ही लगाया गया और आज वो अपनी छाया में स्कूल को समेटे हुए है।
- दोनों शिक्षिकाओं को समुदाय का सहयोग और विश्वास प्राप्त है जो उनके काम को गति देता है साथ ही उनके काम को सरल भी बनाता है। सेवित क्षेत्र काफी विस्तृत होने के बाद भी इलाके के सारे बच्चे 2 से 4 किमी का सफर रोज तय कर स्कूल आते हैं।
- संसाधनों के ना होने का रोना रोने के बजाय उपलब्ध संसाधनों के उपयोग से किस प्रकार बच्चों के लिए उचित शैक्षणिक माहौल तैयार

किया जा सकता ये स्कूल उसका एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

- शिक्षक साथियों द्वारा कार्यशालाओं या अन्य मंचो के जरिए प्राप्त जानकारियों को स्कूल और बच्चों के शिक्षण में परिणित होते देखना एक सुखद अनुभव रहा। बच्चों की भाषा में अच्छी पकड़ और उनकी सृजनशीलता, उनसे बातचीत में साफ झलकती है।

स्कूल में हुए विविध अनुभवों को अपने अन्दर समेटते हुए इन उम्मीद जगाते शिक्षकों और बच्चों में अथाह ऊर्जा का संचार होता हैं।

(सुमन भट्ट से हुई सुरेन्द्र सिंह धामी की बातचीत पर आधारित)